Dr. Md. Mehboob Alam Shah
Deptt of Pol. Science
Guest Asst. Professor

R.B.G.R. College Maharajganj (Siwan)
C.B.C.S. Semester-I (MJC, MIC, MDC)

Q: बहुलवाद से क्या समझते हैं? बहुलवाद के समर्थन में लास्की तथा मैकाइवर के विचारों का वर्णन करें।

राजनीतिक बहुलवाद राज्य की सम्प्रभुता से सम्बंधित कानूनी आदर्शवादी तथा एकलवादी सिद्धांत के खिलाफ एक प्रतिक्रिया थी। यह एक आवाज थी राज्य की सम्प्रभुता को नियमित सीमित तथा नियंत्रित करने की। बहुलवाद ऐसे विचारों का समूह है जो मनुष्य के बहुमुखी रूप को मानते हुए उसके बहुमुखी विकास की कामना करता है। उसका ऐसा विश्वास है कि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सामाजिक स्तर पर विभिन्न अनेक प्रकार के संघों जैसे परिवार, चर्च, क्लब मजदूर संघ व्यावसायिक संघ इत्यादि का अपना-अपना विशेष महत्व होता है। ये संघ समान रूप से प्रभावशाली तथा एक दूसरे के होते हैं तथा उनमें से कोई भी संघ दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण या सर्वोच्च नहीं होता। बहुलवादी राज्य को भी अन्य सामाजिक संघों की भाँति एक संघ मानते हैं। वे राज्य की सम्प्रभुता को सर्वव्यापी (All comprehensive) स्थायी अदेय अविभाज्य तथा निरंकुश मानने वाले हॉब्स रूसो तथा आस्टिन के सिद्धांत का खंडन करते हैं। संक्षेप में सम्प्रभुता से सम्बंधित एकलवादी सिद्धांत (monistic theory of sovereignty) के विरोध में जिस विचारधारा का 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में तथा 20वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में उदय हुआ उसी को राजनीतिक बहुलवाद के नाम से पुकारा जाता है। बहुलवादी लेखकों तथा समर्थकों में मैटलैंड (Maitland) गियर्के (Gierke) जी. डी. एच. कोल (G.D.H. Cole) बार्कर (Barker) लास्की (Laski) मैकाइवर (McIver) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हेराल्ड जोसेफ लास्की (Harold Joseph Laski) ने अपनी पुस्तक ए ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स (A Grammar of Politics) तथा अन्य रचनाओं में सम्प्रभुता से सम्बंधित आस्टिन की एकलवादी सिद्धांत की कटुआलोचना की। इसी प्रकार मैकाइवर ने भी लास्की की भाँति मैकाइवर ने भी सम्प्रभुता सम्बंधी एकलवादी सिद्धांत की कटुआलोचना अपनी पुस्तक The Modern State (1926) में की है। ~~लास्की तथा~~ सम्प्रभुता सम्बंधी एकलवादी सिद्धांत

के विरोध तथा बहुलवाद के पक्ष में लास्की तथा मैकाइवर के विचार निम्न हैं:—

लास्की तथा मैकाइवर दोनों आदर्शवादियों तथा व्यक्तिवादियों के विपरीत राज्य तथा समाज को एक दूसरे के पर्याय नहीं मानते हैं। उनके अनुसार राज्य सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने का आवश्यक साधन है परन्तु वह समाज का पर्याय नहीं है। राज्य समाज के सामान्य हितों का रक्षक तो हो सकता है, किन्तु समाज नहीं हो सकता। लास्की तथा मैकाइवर दोनों ~~यह~~ सामान्य रूप से स्वीकार करते हैं कि समाज में विभिन्न हितों की प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के संघ विद्यमान हैं समाज का उद्देश्य मानव का बहुमुखी विकास है जबकि राज्य का उद्देश्य मानव के बहुमुखी रूपी साध्य के लिए साधन के रूप में काम करना है। ~~लास्की~~

लास्की तथा मैकाइवर का विचार है कि राज्य समाज का सेवक समाज से बहुत छोटा तथा तथा सीमित है। मैकाइवर स्पष्ट रूप से कहता है कि राज्य का स्वरूप एक सेवक की भाँति है स्वामी की तरह नहीं और कोई भी सेवक अपने स्वामी (समाज) से बड़ा नहीं हो सकता। समाज राज्य से इसलिए भी ऊँचा है क्योंकि वह राज्य से बहुत पहले अस्तित्व में आया है। समाज तो सामाजिकता की अभिव्यक्ति है, चेतना का रूप है ऐसा रूप जिसे देखा नहीं जा सकता, महसूस किया जा सकता है। इसके विपरीत राज्य चेतना नहीं बल्कि एक व्यवस्था है विभिन्न संस्थाओं का संगठन।

लास्की तथा मैकाइवर दोनों यह बात ~~स्वीकार~~ समान रूप से स्वीकार करते हैं कि कानून राज्य का आदेश नहीं है। दोनों राज्य को समाज के कुछ विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निर्मित विभिन्न समुदायों की भाँति एक समुदाय बतलाते हैं। जब कोई आदेश जारी किया जाता है तो वह आदेश देने वाले को आदेश पानेवाले से अलग कर देता है। जबकि वास्तविकता यह है कि कानून किसी तरह से कानून बनाने वाले के अधीन नहीं है भले ही कानून बनाने ... कोई सम्प्रभु अथवा सम्राट क्यों न हो या विधान ... क्यों न हो। उदाहरण

में यह कहा जा सकता है कि कानून की शक्ति राज्य की शक्ति से बड़ी है। राज्य कानून का संरक्षक अधिक तथा उसका निर्माता कम है। (The state is both child and parent of law.)

लास्की की भाँति मैकाइवर भी सम्प्रभुता से सम्बन्धित एकलवादी सिद्धांत का कटु आलोचक है। दोनों यह स्वीकार करते हैं कि सम्प्रभुता सर्वशक्ति (एकलवाद) धारणा शक्ति को महत्त्व देती है सेवा को नहीं। तर्क यह है कि यदि सम्प्रभु (Sovereign) इसलिए सम्प्रभुता सम्पन्न होता है कि वह कानून बनाता है तो ऐसी धारणा चर्च के सम्बन्ध में भी व्यक्त की जा सकती है क्योंकि वह भी धार्मिक क्षेत्र में नियम को निश्चित करता है। शक्ति राज्य को निरंकुश नहीं बनाती। शक्ति सेवा का साधन मात्र है। जब सेवा असीमित नहीं हो सकती तब शक्ति को कैसे असीमित समझा जा सकता? इसलिए लास्की तथा अन्य बहुलवादियों की भाँति मैकाइवर भी कहते हैं कि किसी भी सरकार को उसकी सेवा की क्षमता से अधिक शक्ति देना भारी भूल होगी।

लास्की तथा मैकाइवर दोनों सम्प्रभुता से सम्बन्धित एकलवादी सिद्धांत को अन्तर्राष्ट्रीयवाद (Internationalism) का दुश्मन मानते हैं। आधुनिक युग में राज्यों के बीच अन्तर्निर्भरता (interdependency) काफी बढ़ी है। यदि ये राज्य राष्ट्र-राज्य (Nation-state) हैं और बाह्य सम्प्रभुता का इस्तेमाल करते हैं तो यह अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए बर्बादी होगी। बीसवीं तथा २१वीं सदी की परिस्थितियां ऐसी नहीं है कि राज्य अपनी मनमानी शक्ति का प्रयोग करे। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में राज्य की आन्तरिक सम्प्रभुता को संवैधानिक कानून (Constitutional law) ने तथा उसकी बाह्य सम्प्रभुता को अन्तर्राष्ट्रीय कानून, UNO जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा अन्तर्राष्ट्रीय संधियों ने गहरे रूप से प्रभावित किया है। अन्तर्राष्ट्रीयवाद में विश्वास करते हुए लास्की ने कहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से स्वतंत्र एवं सर्वोच्च सम्पन्न राज्य का विचार मानवता के कल्याण के लिए घातक है। इसीलिए मैकाइवर को यह आशा है कि समय की बदलती हुई परिस्थितियाँ राज्य को प्रभुसत्ता को त्याग देने के लिए विवश करेंगी।

लास्की तथा मैकाइवर के बहुलवादी विचारों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इन दोनों विद्वानों के ~~में काफी समानता~~ विचारों में काफी समानता है तो कुछ असमानताएं भी मौजूद हैं। जहाँ कि लास्की राजनीतिक आधार पर राज्य की निरंकुश शक्ति की आलोचना की और बहुलवाद के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किया है वहीं मैकाइवर ~~समाजशास्त्रीय~~ आधार पर की आलोचना का आधार समाजशास्त्रीय है।

बहुलवाद के सम्बन्ध में लास्की तथा मैकाइवर द्वारा व्यक्त विचारों ~~की~~ में मौजूद त्रुटियों को दूर कर दिया जाय तो इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि उन्होंने राज्य की निरंकुश शक्ति को समाप्त करने का ~~प्रयास~~ विचार किया है। साथ ही साथ समाज में विभिन्न संघों संस्थाओं तथा सत्ता के विकेन्द्रीकरण के महत्व को उजागर किया है। इतना ही नहीं उन्होंने राज्य ~~की~~ को विधि के अधीन लाकर राज्य की निरंकुश शक्ति को सीमित करने का प्रयास किया है।